दलित आंदोलन और मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता : एक तुलनात्मक अध्ययन

कुवर मंगेश प्रल्हाद
शोधार्थी
महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय
उत्तराखंड

डॉ. सुचिता उपाध्याय
मार्गदर्शक
महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय
उत्तराखंड

सार— प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य 1900 से 1960 के मध्य महाराष्ट्र में चले दलित आंदोलन और मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता के बीच संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। यह कालखंड भारतीय समाज में सामाजिक, राजनीतिक एवं वैचारिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण दौर रहा है। डॉ. भीमराव आंबेडकर के नेतृत्व में दलित आंदोलन ने समानता, सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों के लिए संगठित संघर्ष किया। इस आंदोलन के प्रचार, प्रसार और वैचारिक सुदृढ़ीकरण में पत्रकारिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। इस अध्ययन में दलित पत्रकारिता और मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता दोनों के दृष्टिकोण, विषय-वस्तु, भाषा-शैली और वैचारिक प्रतिबद्धता का विश्लेषण किया गया है। 'मूकनायक', 'बहिष्कृत भारत', 'समता', 'जनता' तथा 'प्रबुध्द भारत' जैसी दलित पत्र-पत्रिकाओं ने दलित समाज की पीड़ा, शोषण और संघर्ष को मुखर स्वर प्रदान किया, वहीं मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता प्रायः राष्ट्रीय आंदोलन, राजनीतिक मुद्दों और सामाजिक सुधारों पर केंद्रित रही। हालांकि कुछ अवसरों पर मुख्यधारा की पत्रकारिता ने दलित प्रश्नों को स्थान दिया, किंतु उसका दृष्टिकोण सीमित और सतर्क रहा।यह शोध ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि दलित पत्रकारिता सामाजिक परिवर्तन का सक्रिय माध्यम बनी, जबकि मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता ने अपेक्षाकृत निष्क्रिय भूमिका निभाई। अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि दलित आंदोलन की वैचारिक शक्ति को समझने के लिए दलित पत्रकारिता का अध्ययन अनिवार्य है। यह शोध सामाजिक न्याय, समावेशी पत्रकारिता और लोकतांत्रिक मूल्यों की समझ को और सुदृढ़ करता है।

कुंजी शब्द— दलित आंदोलन, मराठी पत्रकारिता, मुख्यधारा की पत्रकारिता, डॉ. भीमराव आंबेडकर, सामाजिक न्याय, महाराष्ट्र, 1900-1960।

1. प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में महाराष्ट्र सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक परिवर्तनों का प्रमुख केंद्र रहा है। इस कालखंड में जातिगत असमानता, सामाजिक शोषण और अस्पृश्यता जैसी समस्याओं के विरुद्ध दलित समाज ने संगठित रूप से संघर्ष प्रारंभ किया, जिसे 'दलित आंदोलन' के नाम से जाना जाता है। इस आंदोलन को दिशा और वैचारिक आधार प्रदान करने में डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। दलित आंदोलन का उद्देश्य केवल सामाजिक सुधार तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका लक्ष्य समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व पर आधारित एक न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना था।

किसी भी सामाजिक आंदोलन की सफलता में संचार माध्यमों की भूमिका निर्णायक होती है। पत्रकारिता

समाज का दर्पण होने के साथ-साथ जनमत निर्माण का सशक्त माध्यम भी है। महाराष्ट्र में इस दौर की मराठी पत्रकारिता दो स्पष्ट धाराओं में विभाजित दिखाई देती है। एक ओर दलित पत्रकारिता, जिसने दलित समाज की पीड़ा, संघर्ष और आकांक्षाओं को मुखर स्वर दियाय दूसरी ओर मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता, जो प्रायः राष्ट्रवादी आंदोलन, राजनीतिक घटनाओं और सामाजिक सुधारों पर केंद्रित रही।

दलित पत्रकारिता ने 'मूकनायक', 'बहिष्कृत भारत', 'समता', 'जनता' और 'प्रबुध्द भारत' जैसी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से दलित समाज में चेतना जागृत की और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष को वैचारिक आधार प्रदान किया। इसके विपरीत, मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता का दृष्टिकोण अपेक्षाकृत सीमित रहा, जिसमें दलित प्रश्नों को या तो गौण स्थान मिला या उन्हें सुधारवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया गया। इस प्रकार दोनों प्रकार की पत्रकारिता के उद्देश्य, भाषा, दृष्टिकोण और सामाजिक प्रतिबद्धता में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है।

प्रस्तुत अध्ययन इसी अंतर और संबंधों का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। यह शोध यह समझने का प्रयास करता है कि दलित आंदोलन के संदर्भ में दलित पत्रकारिता और मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता ने किस प्रकार की भूमिका निभाई तथा उनका सामाजिक प्रभाव क्या रहा। यह अध्ययन सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक मूल्यों और पत्रकारिता की जिम्मेदारी को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि

महाराष्ट्र में दलित आंदोलन की पृष्ठभूमि सामाजिक विषमता, जातिगत भेदभाव और धार्मिक रूढ़ियों से जुड़ी हुई है। परंपरागत भारतीय समाज में दलित वर्ग को शिक्षा, संपत्ति और सार्वजनिक जीवन से वंचित रखा गया। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महात्मा ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले ने सामाजिक सुधार की नींव रखी, जिसे बीसवीं शताब्दी में डॉ. भीमराव आंबेडकर ने संगठित आंदोलन का रूप दिया।

1900 से 1960 का कालखंड दलित आंदोलन के लिए निर्णायक रहा। इस दौरान महाड़ सत्याग्रह, मंदिर प्रवेश आंदोलन, पृथक निर्वाचिका का प्रश्न और संविधान निर्माण जैसी घटनाओं ने दलित समाज को नई पहचान दी। इन आंदोलनों के प्रचार-प्रसार और वैचारिक समर्थन के लिए पत्रकारिता एक प्रभावी माध्यम बनी। दलित पत्रकारिता ने दलित समाज के अनुभवों, समस्याओं और संघर्षों को स्वयं की आवाज दी।

इसके समानांतर, मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता का विकास भी हो रहा था, जो स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक सुधारों से जुड़ी हुई थी। हालांकि कुछ प्रगतिशील पत्रों ने दलित प्रश्नों पर लेखन किया, लेकिन अधिकांश मुख्यधारा के समाचार पत्रों में दलित मुद्दों को सीमित स्थान ही प्राप्त हुआ। इस पृष्ठभूमि में दलित पत्रकारिता और मुख्यधारा की पत्रकारिता के बीच वैचारिक भिन्नता स्पष्ट रूप से उभरती है।

1.2 विषय का चयन एवं औचित्य

प्रस्तुत विषय का चयन सामाजिक इतिहास और पत्रकारिता अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। दलित आंदोलन भारतीय सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त अध्याय है, जबकि पत्रकारिता उस परिवर्तन की अभिव्यक्ति और दस्तावेजीकरण का माध्यम रही है। इस विषय के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि किस प्रकार विभिन्न सामाजिक वर्गों की पत्रकारिता ने एक ही आंदोलन को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया।

इस विषय के चयन का प्रमुख औचित्य यह है कि दलित पत्रकारिता को लंबे समय तक अकादमिक विमर्श में अपेक्षित महत्व नहीं मिला। साथ ही, मुख्यधारा की पत्रकारिता की भूमिका पर आलोचनात्मक अध्ययन भी सीमित रहे हैं। तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से दोनों के बीच अंतर, समानताएँ और सामाजिक प्रभाव स्पष्ट किए जा सकते हैं।

यह अध्ययन वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है, क्योंकि आज की मीडिया संरचना में भी हाशिए के वर्गों की आवाज को पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाता। यह शोध पत्रकारिता की सामाजिक जिम्मेदारी और समावेशी

दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करता है। इसलिए यह विषय न केवल ऐतिहासिक महत्व रखता है, बल्कि समकालीन मीडिया विमर्श के लिए भी उपयोगी है।

1.3 अध्ययन की समस्या कथन

- क्या मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता ने दलित आंदोलन को पर्याप्त और निष्पक्ष स्थान दिया?
- दलित पत्रकारिता और मुख्यधारा की पत्रकारिता के दृष्टिकोण में क्या वैचारिक अंतर था?
- दोनों प्रकार की पत्रकारिता की भाषा और प्रस्तुति शैली में क्या भिन्नता दिखाई देती है?
- दलित आंदोलन पर पत्रकारिता के प्रभाव का स्वरूप क्या रहा?
- क्या मुख्यधारा की पत्रकारिता सामाजिक न्याय के प्रश्नों पर उदासीन रही?

1.4 अध्ययन के उद्देश्य

1. दलित आंदोलन के संदर्भ में मराठी पत्रकारिता की भूमिका का अध्ययन करना।
2. दलित पत्रकारिता और मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
3. दलित प्रश्नों के प्रस्तुतीकरण में वैचारिक भिन्नताओं को स्पष्ट करना।
4. सामाजिक चेतना के निर्माण में पत्रकारिता के योगदान का मूल्यांकन करना।
5. समावेशी और जिम्मेदार पत्रकारिता के महत्व को रेखांकित करना।

2 दलित आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (1900-1960)

2.1 महाराष्ट्र में दलित आंदोलन का उद्भव

महाराष्ट्र में दलित आंदोलन का उद्भव सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता जैसी अमानवीय प्रथाओं के प्रतिरोध के रूप में हुआ। परंपरागत हिंदू समाज व्यवस्था में दलितों को शिक्षा, संपत्ति, धार्मिक स्थलों और सार्वजनिक संसाधनों से वंचित रखा गया। इस सामाजिक अन्याय के विरुद्ध उन्नीसवीं शताब्दी में महात्मा ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले ने चेतना का बीज बोया, जिसे बीसवीं शताब्दी में संगठित आंदोलन का स्वरूप प्राप्त हुआ।

1900 के दशक में औपनिवेशिक शासन, सामाजिक सुधार आंदोलनों और शिक्षा के प्रसार ने दलित समाज में आत्मसम्मान और अधिकार चेतना को जन्म दिया। इसी काल में डॉ. भीमराव आंबेडकर के नेतृत्व में दलित आंदोलन एक सशक्त सामाजिक-राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरा। आंदोलन का मुख्य उद्देश्य अस्पृश्यता का उन्मूलन, सामाजिक समानता की स्थापना और दलितों को नागरिक अधिकार दिलाना था।

महाराष्ट्र के शहरी क्षेत्रों मुंबई, पुणे, नागपुर, औरंगाबाद में दलित संगठनों, सभाओं और आंदोलनों ने गति पकड़ी। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों में भी सामाजिक चेतना का प्रसार हुआ। शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व जैसे मुद्दे आंदोलन के केंद्र में रहे। इस दौर में दलित आंदोलन केवल विरोध तक सीमित न रहकर वैचारिक और संस्थागत स्वरूप ग्रहण करता है। 1900-1960 का कालखंड दलित समाज के आत्मबोध और सामाजिक पुनर्निर्माण का निर्णायक चरण माना जाता है।

2.2 डॉ. भीमराव आंबेडकर का नेतृत्व

डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर महाराष्ट्र के दलित आंदोलन के प्रमुख नेता, चिंतक और मार्गदर्शक रहे। उन्होंने दलित समाज को संगठित कर उसे सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों के लिए संघर्षरत किया। आंबेडकर ने शिक्षा को मुक्ति का सबसे सशक्त साधन माना और दलितों को शिक्षित, संगठित और संघर्षशील बनने का संदेश दिया।

उनका नेतृत्व केवल आंदोलनों तक सीमित नहीं था, बल्कि वैचारिक स्तर पर भी अत्यंत प्रभावशाली था। उन्होंने जाति व्यवस्था की तीखी आलोचना की और सामाजिक लोकतंत्र की अवधारणा प्रस्तुत की। डॉ. आंबेडकर ने पत्रकारिता को आंदोलन का प्रभावी माध्यम बनाया और दलितों की आवाज को स्वयं मंच प्रदान किया। उनके नेतृत्व में दलित आंदोलन को स्पष्ट दिशा, लक्ष्य और वैचारिक आधार प्राप्त हुआ, जिसने उसे राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।

2.3 प्रमुख आंदोलन एवं घटनाएँ

1900-1960 के कालखंड में महाराष्ट्र में अनेक प्रमुख दलित आंदोलन और घटनाएँ घटित हुईं। 1927 का महाड़ सत्याग्रह दलित आंदोलन का ऐतिहासिक मोड़ था, जिसमें सार्वजनिक जल स्रोतों पर दलितों के अधिकार की मांग की गई। इसी वर्ष मनुस्मृति दहन की घटना ने आंदोलन को वैचारिक तीव्रता प्रदान की।

1930 के दशक में मंदिर प्रवेश आंदोलन ने धार्मिक समानता के प्रश्न को केंद्र में लाया। दलितों को मंदिरों में प्रवेश का अधिकार दिलाने के लिए व्यापक संघर्ष हुआ। 1932 में पूना समझौता दलित राजनीति का महत्वपूर्ण पड़ाव था, जिसने दलितों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व की दिशा तय की।

1940 के दशक में संविधान निर्माण की प्रक्रिया में डॉ. आंबेडकर की भूमिका ने दलित आंदोलन को संवैधानिक आधार प्रदान किया। 1950 में भारतीय संविधान के लागू होने के साथ ही दलित आंदोलन को कानूनी संरक्षण और नई दिशा मिली। ये सभी आंदोलन दलित समाज में आत्मसम्मान, अधिकार चेतना और सामाजिक परिवर्तन के प्रतीक बने।

3. दलित पत्रकारिता का स्वरूप और भूमिका

3.1 दलित पत्रकारिता की अवधारणा

दलित पत्रकारिता वह पत्रकारिता है जो दलित समाज के अनुभवों, पीड़ा, संघर्ष और आकांक्षाओं को केंद्र में रखती है। इसका उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं, बल्कि सामाजिक अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध और चेतना निर्माण करना है। यह पत्रकारिता वंचित वर्ग की स्वयं की आवाज है, जो मुख्यधारा की उपेक्षा के कारण अस्तित्व में आई।

दलित पत्रकारिता ने जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता और सामाजिक शोषण को बेनकाब किया। इसकी भाषा सरल, तीखी और प्रतिरोधात्मक रही। यह पत्रकारिता सामाजिक परिवर्तन की सक्रिय साधक बनी और दलित आंदोलन को वैचारिक आधार प्रदान किया। महाराष्ट्र में यह पत्रकारिता डॉ. आंबेडकर के नेतृत्व में एक संगठित आंदोलनात्मक स्वरूप में विकसित हुई।

3.2 प्रमुख दलित पत्र-पत्रिकाएँ

(क) मूकनायक

'मूकनायक' डॉ. आंबेडकर द्वारा 31 जनवरी 1920 को आरंभ की गई पहली दलित पत्रिका (पाक्षिक) थी। इसका उद्देश्य दलित समाज की मूक पीड़ा को स्वर देना था। इस पत्रिका ने सामाजिक अन्याय, शिक्षा और अधिकारों के प्रश्नों को प्रमुखता से उठाया। 'मूकनायक' ने दलित चेतना के निर्माण में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

(ख) बहिष्कृत भारत

'बहिष्कृत भारत' डॉ. आंबेडकर द्वारा 3 अप्रैल 1927 को आरंभ की गई दलित समाज की राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं को उजागर करने वाली महत्वपूर्ण पत्रिका (पाक्षिक) थी। इसने अस्पृश्यता, भेदभाव और शोषण के विरुद्ध तीखे लेख प्रकाशित किए। यह पत्रिका दलित आंदोलन का वैचारिक मंच बनी।

(ग) समता

'समता' पत्रिका (पाक्षिक) डॉ. आंबेडकर द्वारा 29 जून 1928 को आरंभ की गई थी। यह 'समता सैनिक दल' का मुखपत्र था, उन्होंने इसे जाति आधारित भेदभाव के खिलाफ एक वैचारिक हथियार के .रूप में उपयोग किया। इसका उद्देश्य दलितों के बीच समानता, बंधुत्व और सामाजिक न्याय का प्रचार करना था।

(घ) जनता

'जनता' डॉ. आंबेडकर द्वारा 24 नवबंर 1930 को आरंभ की गई पत्रिका (साप्तीहिक) ने दलित आंदोलन को व्यापक सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ में प्रस्तुत किया। इसमें दलितों के साथ-साथ श्रमिकों और वंचित वर्गों के मुद्दों को भी स्थान मिला। इस पत्रिका ने लोकतांत्रिक चेतना के प्रसार में योगदान दिया।

(ङ) प्रबुध्द भारत

'प्रबुध्द भारत' यह पाक्षिक पत्र था, जिसे 4 फरवरी 1956 को डॉ. अबेंडकर ने सामाजिक परिवर्तन के लिए शुरू किया था। इसका मुख्य लक्ष्य दलितों और वंचित वर्गों की आवाज को उठाना तथा मूकनायक के विचारो को आगे बढाना था।

3.3 दलित चेतना के निर्माण में भूमिका

दलित पत्रकारिता ने दलित समाज में आत्मसम्मान, अधिकार बोध और संगठन की भावना को सुदृढ़ किया। इसने शिक्षा, समानता और न्याय के विचारों को जन-जन तक पहुँचाया। दलित चेतना के निर्माण में यह पत्रकारिता एक वैचारिक शस्त्र के रूप में उभरी और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक शक्ति बनी।

4 मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता का स्वरूप

4.1 मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता की विशेषताएँ

मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता का केंद्र राष्ट्रवादी आंदोलन, राजनीतिक घटनाएँ और सामाजिक सुधार रहे। इसकी भाषा अपेक्षाकृत संयमित और सुधारवादी थी। यह पत्रकारिता शिक्षित मध्यवर्ग और अभिजात समाज को ध्यान में रखकर संचालित होती थी।

4.2 प्रमुख मराठी पत्र-पत्रिकाएँ

इस कालखंड में 'केसरी'(लोकमान्य तिलक, संपादक-गोपाळ गणेश आगरकर, पुणे, 1881), 'भाला'(संपादक-भास्कर बळवंत भोपटकर, पुणे, 1906), 'नवाकाळ'(संपादक-कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर, मुंबई, 1923) 'पुढारी'(संपादक-गणपतराव गोविंदराव जाधव, कोल्हापुर, 1937), और 'सकाळ' (संपादक-नानासाहेब पारूलेकर, पुणे, 1932) जैसी पत्र-पत्रिकाएँ प्रमुख थीं। इन पत्रों ने स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक सुधारों पर लेखन किया, किंतु दलित प्रश्नों को सीमित स्थान दिया।

4.3 दलित प्रश्नों के प्रति दृष्टिकोण

मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता ने दलित प्रश्नों को प्रायः सहानुभूतिपूर्ण किंतु सुधारवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया। यह दृष्टिकोण दलितों को सामाजिक सुधार का विषय मानता था, न कि सामाजिक परिवर्तन का सक्रिय कर्ता। इस कारण दलित पत्रकारिता और मुख्यधारा की पत्रकारिता के बीच वैचारिक अंतर स्पष्ट दिखाई देता है।

5. दलित आंदोलन का प्रस्तुतीकरणर: एक तुलनात्मक अध्ययन

5.1 दलित पत्रकारिता बनाम मुख्यधारा की पत्रकारिता

दलित आंदोलन के प्रस्तुतीकरण में दलित पत्रकारिता और मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता के दृष्टिकोण में मूलभूत अंतर दिखाई देता है। दलित पत्रकारिता ने आंदोलन को एक अधिकार-आधारित संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया, जहाँ दलित स्वयं परिवर्तन के कर्ता थे। इसमें दलितों की पीड़ा, अनुभव और आकांक्षाओं को केंद्रीय स्थान दिया गया।

इसके विपरीत, मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता ने दलित आंदोलन को प्रायः सामाजिक सुधार या सहानुभूति के विषय के रूप में देखा। अधिकांश मामलों में दलितों को समाज के सुधार की आवश्यकता वाले वर्ग के रूप में चित्रित किया गया, न कि संघर्षशील सामाजिक शक्ति के रूप में। इस प्रकार दलित पत्रकारिता सक्रिय, संघर्षशील और परिवर्तनकारी रही, जबकि मुख्यधारा की पत्रकारिता अपेक्षाकृत सतर्क और सीमित दृष्टि वाली रही।

5.2 भाषा, विचारधारा एवं मुद्दों का तुलनात्मक विश्लेषण

दलित पत्रकारिता की भाषा सरल, प्रतिरोधात्मक और जनसाधारण से जुड़ी हुई थी। इसमें जाति-व्यवस्था, अस्पृश्यता, सामाजिक अन्याय और अधिकारों जैसे मुद्दे प्रमुखता से उठाए गए। इसकी विचारधारा समानता, सामाजिक न्याय और आत्मसम्मान पर आधारित थी।

मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता की भाषा अपेक्षाकृत शिष्ट, संयमित और अभिजात वर्ग से प्रभावित रही। इसमें राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक सुधार जैसे व्यापक मुद्दों पर अधिक बल दिया गया। दलित प्रश्नों को इसमें अक्सर गौण या सीमित संदर्भ में प्रस्तुत किया गया। इस प्रकार भाषा, विचारधारा और मुद्दोंकृतीनों स्तरों पर दोनों पत्रकारिताओं के बीच स्पष्ट अंतर दिखाई देता है।

5.3 संपादकीय नीति एवं सामाजिक प्रतिबद्धता

दलित पत्रकारिता की संपादकीय नीति स्पष्ट रूप से सामाजिक परिवर्तन और दलित मुक्ति के प्रति प्रतिबद्ध थी। इसके विपरीत, मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता की संपादकीय नीति संतुलन और सामाजिक यथास्थिति बनाए रखने की ओर अधिक झुकी हुई थी। यही सामाजिक प्रतिबद्धता का मूल अंतर रहा।

6. मराठी पत्रकारिता का दलित आंदोलन पर प्रभाव

6.1 सामाजिक जागरूकता पर प्रभाव

दलित पत्रकारिता ने दलित समाज में सामाजिक जागरूकता और आत्मसम्मान की भावना विकसित की। इसने दलितों को अपने अधिकारों और शोषण के कारणों को समझने में सहायता की। मुख्यधारा की पत्रकारिता ने सीमित रूप में ही सही, दलित प्रश्नों को सार्वजनिक विमर्श में लाने का कार्य किया।

6.2 राजनीतिक चेतना के विकास में योगदान

दलित पत्रकारिता ने दलित समाज को राजनीतिक रूप से जागरूक किया और प्रतिनिधित्व के महत्व को रेखांकित किया। डॉ. आंबेडकर के विचारों के प्रसार में इसकी विशेष भूमिका रही। मुख्यधारा की पत्रकारिता ने राजनीतिक चेतना के विकास में अप्रत्यक्ष योगदान दिया।

6.3 सीमाएँ एवं विरोधाभास

दलित पत्रकारिता की पहुँच सीमित थी, जबकि मुख्यधारा की पत्रकारिता वैचारिक प्रतिबद्धता के अभाव से ग्रस्त रही। दोनों के बीच यह विरोधाभास दलित आंदोलन के व्यापक और संतुलित प्रस्तुतीकरण में बाधक बना।

7 साहित्य समीक्षा

1. डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर (1920-1956)

डॉ. भीमराव आंबेडकर ने दलित आंदोलन को वैचारिक दिशा प्रदान की। उनके द्वारा संपादित पत्र मूकनायक, बहिष्कृत भारत, समता, जनता और प्रबुध्द भारत के माध्यम से दलित समाज की सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षिक समस्याओं को मुखर रूप से प्रस्तुत किया गया। आंबेडकर की पत्रकारिता का उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं था, बल्कि दलित समाज में चेतना जागृत करना और संगठित संघर्ष की प्रेरणा देना था। उनका लेखन मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता से भिन्न और अधिक संघर्षशील था।

2. धनंजय कीर (1954)

धनंजय कीर ने अपनी कृति डॉ. आंबेडकर लाइफ एंड मिशन में महाराष्ट्र के दलित आंदोलन के ऐतिहासिक विकास और उसमें पत्रकारिता की भूमिका का उल्लेख किया है। उनके अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि दलित आंदोलन को समझने के लिए आंबेडकरी विचारधारा और दलित प्रेस का अध्ययन अनिवार्य है। कीर का लेखन दलित आंदोलन की सामाजिक पृष्ठभूमि को समझने में सहायक है।

3. डॉ. शरणकुमार लिम्बाले (2004)

शरणकुमार लिम्बाले ने दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र में दलित चेतना, संघर्ष और आत्मानुभूति की चर्चा की है। उनका अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि दलित साहित्य और दलित पत्रकारिता दोनों का मूल उद्देश्य सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना है। लिम्बाले का कार्य दलित आंदोलन और अभिव्यक्ति के माध्यमों के बीच संबंध को समझने में सहायक है।

4. डॉ. यशवंत मनोहर (2010)

डॉ. यशवंत मनोहर ने मराठी साहित्य और पत्रकारिता के सामाजिक सरोकारों का विश्लेषण किया है। उनके अनुसार मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता ने प्रारंभिक दौर में दलित प्रश्नों को सीमित महत्व दिया। उनका अध्ययन यह संकेत करता है कि मुख्यधारा की पत्रकारिता सामाजिक संरचना से प्रभावित रही, जबकि दलित पत्रकारिता परिवर्तनकामी थी।

5. नामदेव ढसाल (1972)

नामदेव ढसाल के लेखन और दलित पैंथर आंदोलन से संबंधित विचार दलित पत्रकारिता के उग्र और प्रतिरोधात्मक स्वरूप को समझने में सहायक हैं। उन्होंने दलित शोषण, जातिगत हिंसा और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध तीखी भाषा का प्रयोग किया। उनका योगदान यह दर्शाता है कि दलित पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं बल्कि आंदोलन का हथियार रही है।

Vol. 14, Issue 04, April: 2026
(IJRMP) ISSN (o): 2320- 0901

8 शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इस शोध में 1900-1960 के दौरान महाराष्ट्र में दलित आंदोलन और मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता की भूमिका का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। शोध का उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार दलित पत्रकारिता ने सामाजिक चेतना को सशक्त किया और मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता ने दलित प्रश्नों को किस दृष्टि से प्रस्तुत किया।

इस अध्ययन में ऐतिहासिक विधि और सामग्री विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। दलित पत्र-पत्रिकाओं और मुख्यधारा की मराठी पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों, संपादकीयों और समाचारों के विषयवस्तु का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाले गए हैं।

8.1 शोध अभिकल्प

यह शोध गुणात्मकएवं आंशिक मात्रात्मक प्रकृति का है।

गुणात्मक विश्लेषण विचारधारा, भाषा-शैली, दृष्टिकोण

मात्रात्मक विश्लेषण विषयों का प्रतिशत (%) आधारित वर्गीकरण

शोध का डिजाइन तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन है।

8.2 नमूना आकार

इस अध्ययन के लिए निम्नलिखित नमूना लिया गया है,

श्रेणी	संख्या
दलित पत्र-पत्रिकाएँ	5
मुख्यधारा की मराठी पत्र-पत्रिकाएँ	5
कुल चयनित लेख-संपादकीय	100

50 लेख दलित पत्रकारिता से

50 लेख मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता से

8.3 डेटा विश्लेषण विधि

डेटा का विश्लेषण प्रतिशत (%) विधि द्वारा किया गया है।

विषयों को निम्न श्रेणियों में बाँटा गया:

- सामाजिक अन्याय
- राजनीतिक अधिकार
- शिक्षा
- अस्पृश्यता विरोध
- सुधारात्मक दृष्टिकोण

तालिका 1 : दलित पत्रकारिता में विषयों का प्रतिशत वितरण

विषय	प्रतिशत
सामाजिक अन्याय	40%
राजनीतिक अधिकार	25%
शिक्षा	20%
अन्य	15%

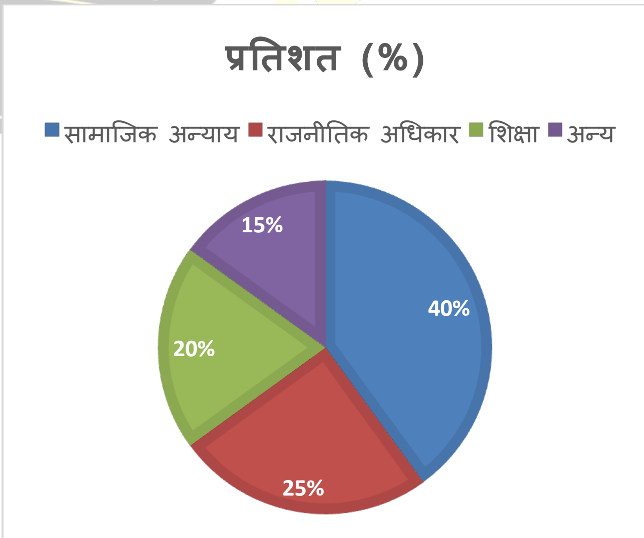

व्याख्या

तालिका से स्पष्ट है कि दलित पत्रकारिता का मुख्य फोकस सामाजिक अन्याय (40%) और राजनीतिक अधिकार (25%) पर रहा। इससे यह सिद्ध होता है कि दलित पत्रकारिता आंदोलन का सक्रिय माध्यम थी।

तालिका 2: मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता में दलित विषयों का प्रतिशत

विषय	प्रतिशत (%)
सामाजिक सुधार	30%
राजनीतिक समाचार	35%
दलित मुद्दे	15%
अन्य	20%

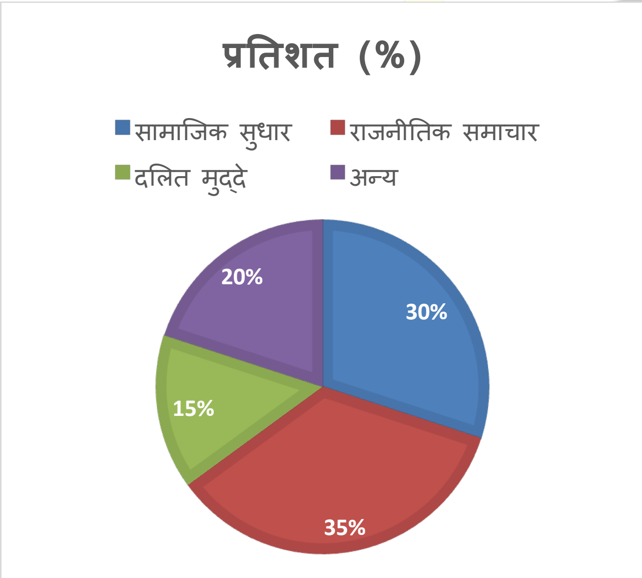

व्याख्या

मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता में दलित मुद्दों को केवल 15% स्थान मिला, जिससे यह स्पष्ट होता है कि दलित प्रश्न प्राथमिक विषय नहीं थे।

9. चर्चा

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दलित पत्रकारिता आंदोलन-केन्द्रित, संघर्षशील और परिवर्तनकामी थी, जबकि मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता अपेक्षाकृत तटस्थ और सीमित दृष्टिकोण अपनाती रही। दलित पत्रकारिता ने जहां शोषण और भेदभाव को सीधे चुनौती दी, वहीं मुख्यधारा की पत्रकारिता ने सामाजिक संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया।

10. निष्कर्ष

यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि 1900-1960 के दलित आंदोलन के विकास में दलित पत्रकारिता की भूमिका निर्णायक रही। मुख्यधारा की मराठी पत्रकारिता ने आंदोलन को पूर्ण समर्थन नहीं दिया, जबकि दलित पत्रकारिता आंदोलन की आवाज बनी। दोनों के दृष्टिकोण में वैचारिक अंतर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

11. सुझाव

- मुख्यधारा की पत्रकारिता को हाशिए के वर्गों को अधिक स्थान देना चाहिए।
- दलित पत्रकारिता के ऐतिहासिक योगदान को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।
- भविष्य में मीडिया अध्ययन में तुलनात्मक सामाजिक शोध को बढ़ावा दिया जाए।
- पत्रकारिता को सामाजिक न्याय का माध्यम बनाया जाए, न कि केवल सूचना का।

संदर्भ सूची

1. आंबेडकर भीमराव रामजी (1927) मूकनायक, बंबई, दलित सेवा संघ प्रकाशन।
2. आंबेडकर भीमराव रामजी (1929) बहिष्कृत भारत, बंबई, बहिष्कृत हितकारिणी सभा।
3. आंबेडकर भीमराव रामजी (1928) समता, बंबई, समता सैनिक दल।
4. आंबेडकर भीमराव रामजी (1930) जनता, बंबई, जनता प्रकाशन।
5. कीर धनंजय (1954) डॉ. आंबेडकर : जीवन और मिशन, मुंबई, पॉपुलर प्रकाशन।
6. खैरमोडे गंगाधर (1982) डॉ. आंबेडकर : चरित्र और कार्य, पुणे, सुगावा प्रकाशन।
7. लिम्बाले शरणकुमार (2004) दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, औरंगाबाद, लोकप्रिय प्रकाशन।
8. ढसाल नमदेव (1972) गोलपीठा मुंबई, लोकवाङ्मय गृह।
9. मनोहर यशवंत (2010) मराठी साहित्य और सामाजिक चेतना, नागपुर, कॉन्टिनेंटल प्रकाशन।
10. पवार जयंत (2009) दलित पत्रकारिता स्वरूप और संघर्ष, पुणे, साधना प्रकाशन।

11. जाधव प्रकाश (2015) महाराष्ट्र का दलित आंदोलन : एक ऐतिहासिक अध्ययन, औरंगाबाद, दिशा प्रकाशन।
12. कांबले बाबूराव (1998) दलित आंदोलन और आंबेडकरी विचारधारा, मुंबई, ग्रंथावली।
13. ओमवेट गेल (1994) भारत में दलित और लोकतांत्रिक क्रांति, हिंदी अनुवाद, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
14. देशमुख सुनील (2018) मराठी पत्रकारिता का इतिहास, पुणे, नीरज प्रकाशन।
15. पाटील रमेश (2020) मुख्यधारा की पत्रकारिता और समाज, कोल्हापुर, शिवाजी विश्वविद्यालय प्रकाशन।
16. सावंत विजय (2022) दलित आंदोलन और मीडिया : विमर्श, मुंबई, हिमांशु प्रकाशन।
17. प्रसन्नकुमार अकलूजकर, (2000), वृत्तपत्रविद्या, मराठी विश्वकोश, पुणे।